मूल्यांकन और सीखना

शहनाज़ डी के

शहनाज़ का यह लेख सतत व समग्र मूल्यांकन पर केन्द्रित है। वे बताती हैं कि सतत व समग्र मूल्यांकन की बात सभी विद्यालयों में होती है लेकिन मूल्यांकन की प्रक्रिया में कुछ ख़ास बदलाव हुआ नहीं है। वे अपनी विज्ञान की कक्षा में बच्चों के साथ किए गए काम का विवरण देते हुए बताती हैं कि सतत और समग्र मूल्यांकन का अर्थ क्या है? यह कैसे शिक्षक को बच्चों के सीखने को समझने में और फिर उसके अनुसार आगे क्या करना है, यह सोचने में मदद करता है। वे इस बात को भी दर्शाती हैं कि सही मूल्यांकन बच्चों को भी यह एहसास देता है कि उन्हें कुछ आता है जो सीखते रहने के लिए बहुत ज़रूरी है। सं.

पृष्ठभूमि

आज भी विद्यालयों में विद्यार्थियों के मूल्यांकन करने का तरीक़ा (पारम्परिक तरीक़ा) वर्षों पुराना है, जिसमें पूरे साल के दौरान दो-तीन मासिक परख और दो परीक्षाएँ लेकर बच्चों को उनकी अकादमिक स्थिति से अवगत करा दिया जाता है। इन परीक्षाओं के प्रश्न-पत्रों के कई प्रश्न ऐसे बनाए गए होते हैं जो कक्षा के अधिकांश बच्चों को पढ़कर समझ में ही नहीं आते हैं और इससे उनका परीक्षा परिणाम भी अच्छा नहीं रहता है। यानी, यह मूल्यांकन अधिकतर बच्चों को यह महसूस कराता है कि उनका ज्ञान बहुत कम है और कक्षा में इतना समय गुज़ारते हुए भी उन्होंने कुछ नहीं सीखा।

आजकल सतत व समग्र मूल्यांकन (CCE) के तहत सरकारी व निजी, दोनों प्रकार के विद्यालयों में सतत मूल्यांकन किया जा रहा है। परन्तु इस सतत मूल्यांकन में भी इसकी मूल भावना 'सीखने को सम्भव करने के लिए सीखने के साथ-साथ मूल्यांकन' को दरकिनार करते हुए बच्चों को पेपर या वर्कशीट देकर बैठा दिया जाता है और इसे हल करने को कहा जाता है। उनकी किसी प्रकार की कोई मदद नहीं की जाती है। इन्हें भी बच्चे अपनी याददाश्त के सहारे ही पूरा करते हैं।

कक्षा में बच्चों का सतत मूल्यांकन करते समय और मौखिक परीक्षाओं के दौरान मैंने कुछ ऐसे प्रयास किए, जिससे बच्चों को परीक्षा का डर भी न लगे और उनका सीखना भी होता रहे। इन प्रयासों के दौरान मैंने बच्चों को टटोलने की कोशिश की और उनकी मदद भी की ताकि वे एक क़दम और आगे बढ़ सकें।

मेरा स्कूल और कक्षा

मैं ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय की छठवीं, सातवीं और आठवीं कक्षाओं को पढ़ाती हूँ। इस लेख में कक्षा छठवीं की छात्राओं के साथ किए गए मेरे काम का अनुभव है।

इस विद्यालय में पढ़ने वाली छात्राएँ दो प्रकार के घरों से आती हैं। एक है, व्यापारी व नौकरीपेशा वर्ग व दूसरा, मज़दूरी करने वाला वर्ग। नौकरीपेशा और व्यापारी वर्ग की पृष्ठभूमि से आने वाली छात्राओं की पढ़ने-लिखने की क्षमता बेहतर होती है। उनको शिक्षक द्वारा

दिया गया गृहकार्य करने के लिए घर पर भी सहयोग मिलता है। परन्तु जो बालिकाएँ मज़दूर वर्ग से आती हैं उनमें से अधिकांश के माता-पिता पढ़े-लिखे नहीं होते, इसके साथ ही तंग



आर्थिक स्थिति की वजह से उनका बहुत-सा समय अपने माता-पिता को विभिन्न तरह से सहयोग करने में बीतता है और इसी वजह से वे विद्यालय भी नियमित तौर पर नहीं आ पाती हैं। कभी-कभी तो अभिभावक बालिकाओं को कारख़ानों, भवन निर्माण आदि के काम करवाने भी अपने साथ लेकर जाते हैं। इस वजह से वे कई दिनों तक कक्षा से अनुपस्थित रहती हैं और पढ़ाई में पिछड़ती जाती हैं।

अपनाया गया मूल्यांकन का तरीक़ा

कक्षा 6 की बालिकाओं की विज्ञान की पहली मौखिक परीक्षा होने वाली थी। ये बालिकाएँ इसी वर्ष इस स्कूल में आई हैं। मैंने तय किया था कि मैं उनसे रटे हुए 10 प्रश्नों के उत्तर नहीं सुनूँगी, इसके बजाय मैंने सभी बालिकाओं को अपनी पाठ्यपुस्तक के किसी एक पाठ से, उन्होंने क्या सीखा यह बताने को कहा। सभी बच्चों ने झटपट अपनी किताबें खोलीं और अपना-अपना पसन्दीदा पाठ लेकर मेरे पास आ गए। परन्तु कुछ ही बच्चे यह बता पाए कि उन्होंने क्या सीखा, जैसे– रिद्धि बोली, 'भोजन से पोषण' वाले पाठ में हमने सीखा कि बच्चों को बड़ा होने के लिए प्रोटीन चाहिए। इसलिए उन्हें ज़्यादा दूध पीना चाहिए क्योंकि दूध में प्रोटीन पाया जाता है।

लेकिन कुछ बच्चियाँ ऐसी भी थीं जो अपनी सीखी हुई बात को समझा नहीं सकीं। उनसे मैंने उनके द्वारा चुने हुए पाठ का कोई भी हिस्सा पढ़ने के लिए कहा। वे अपनी बात समझा नहीं पा रही थीं तो छोटे-छोटे प्रश्नों के द्वारा उनकी मदद की गई। एक बालिका 'प्राकृतिक वस्त्र' वाला पाठ लाई परन्तु वह कुछ बोली नहीं। मैंने उससे पूछा कि यह पाठ किसके बारे में है? उसने कहा, कि कपड़े के बारे में। फिर मैंने पूछा कि जानती हो कपड़ा कैसे बनता है। वह बोली, हाँ, कपास से रुई बनती है। मैंने फिर पूछा कि उसका क्या करते हैं। उसने कहा कि रुई से धागा बनाते हैं और फिर मशीन पर कपड़ा बुनते हैं।

एक अन्य बालिका 'सूक्ष्मजीव' वाला पाठ लेकर मेरे पास आई। मैंने पूछा कि इस पाठ में तुमने क्या समझा? वह बोली, सूक्ष्मजीव हमारे लिए अच्छे भी होते हैं और ख़राब भी होते हैं। मैंने पूछा, अच्छा बताओ, हम इसे देख सकते हैं क्या। उसने कहा, नहीं। तो फिर कैसे पता चलता है कि अच्छे हैं या ख़राब। वह बोली, वो तो चीज़ों को देखने से पता चल जाता है। अच्छे सूक्ष्मजीव दूध को दही में बदलने वाले होते हैं जो हमारे लिए लाभदायक है और ख़राब सूक्ष्मजीव, जो चित्र में दिखाए गए हैं, नींबू के ऊपर दाग लगा देते हैं। मैंने पूछा, क्या इनके नाम बता सकती हो। वह बोली, नहीं मैडम, वो तो याद नहीं हैं।

एक और बालिका 'पौधों के प्रकार' पाठ के बारे में बात करना चाहती थी। वह बोली, मैडम, इस पाठ में दो प्रकार के पौधे दिए गए हैं– जल में और स्थल पर रहने वाले। मैंने पूछा, यदि दोनों प्रकार के पौधे तुम्हारे सामने रखे हों तो तुम उन्हें कैसे पहचानोगी? उसने कहा कि जल वाले पौधे की जड़ें छोटी होती हैं क्योंकि वो तो पानी में ही रहती हैं और रेगिस्तान वाले पौधों की जड़ें लम्बी होती हैं क्योंकि वहाँ पानी कम होता है। मैंने पूछा कि स्थल पर और कौन-से पौधे होते हैं। बालिका बोली, पहाड़ वाले और मैदानों वाले भी अलग-अलग होते हैं।

कक्षा में 12 छात्राएँ ऐसी थीं जो कुछ भी नहीं बता सकीं क्योंकि उनके पढ़ने का कौशल अभी कक्षा के अनुसार विकसित नही हो पाया था। उनसे दैनिक जीवन के विज्ञान की बातचीत की गई। मैंने पूछा कि सुबह से रात तक पानी कब-कब काम में लेना पड़ता है। वो सारे काम बताते हुए कह रही थीं कि घर बनाने में भी पानी चाहिए, साइकिल धोने में भी पानी चाहिए। मैंने पूछा, साइकिल मशीन है क्या? सब चुप हो गईं। एक हमेशा चुप रहने वाली बालिका कमला बोली, हाँ है न, हमारा काम जल्दी हो जाता है। अच्छा बताओ, साइकिल के कौन-कौन से भाग होते हैं? बच्चे बोले, हैण्डल, सीट, पहिया आदि। एक बालिका कैलाशी कहने लगी कि साइकिल में चैन भी होती है, अगर चैन उतर जाए तो साइकिल नहीं चलेगी। और इन सारी बातों से उनकी मौखिक परीक्षा आसानी से हो गई, क्योंकि इस तरह के प्रश्नों से उनका आत्मविश्वास बढ़ा। उन्हें लगा कि वे भी मौखिक परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दे सकती हैं। वे हमेशा की तरह चुपचाप नहीं खड़ी रहीं।

जिन छात्राओं को बिलकुल भी पढ़ना नहीं आता था उनके साथ बातचीत केवल चित्रों के माध्यम से की गई।

मूल्यांकन के आधार पर मेरे द्वारा बच्चों के साथ किया गया काम

इस परीक्षा के बाद इन छात्राओं के साथ पुस्तकालय व खेल के दो-दो कालांशों में कहानियों की पुस्तकें पढ़ने का काम किया ताकि वे पढ़ने में बेहतर हो सकें। घर पर भी इन किताबों को ले जाने की उन्हें छूट थी। पर चूँकि घर पर उन्हें कोई मदद नहीं मिलती थी अतः फिर वे स्कूल में ही अपनी साथी छात्राओं के साथ किताबें पढ़ती थीं। धीरे-धीरे वे पढ़ने लगीं तो उन्हें इन कहानियों को पढ़कर सुनाने के लिए कहा गया। दो-तीन महीनों में उनकी पढ़ने की गति में काफ़ी सुधार हुआ। परन्तु तीन बालिकाएँ जो नियमित नहीं आती थीं, उनकी स्थिति में कुछ ख़ास सुधार नहीं दिखाई दिया।



इस मूल्यांकन ने मेरी क्या मदद की ?

इस तरीक़े से मूल्यांकन करने के बाद मैं और मेरी छात्राएँ, सभी सन्तुष्ट थे। छात्राओं में यह विश्वास आया कि उन्हें भी बहुत कुछ आता है क्योंकि वे बहुत-से प्रश्नों के जवाब दे पाई थीं। वे इस बार की मौखिक परीक्षा में हमेशा की तरह चुपचाप नहीं थीं। यह भी कि सभी बच्चों ने प्रश्नों का बिना रटे जवाब दिया।

मुझे यह समझ आया कि केवल पाठ्यपुस्तक में दिए गए प्रश्नों और विषयवस्तु से सीधे जुड़े प्रश्नों की बौछार करके बच्चों की क्षमता का सही आकलन नहीं किया जा सकता। जब हम विद्यार्थियों को अलग-अलग तरीक़ों से, पुस्तक को सामने रखकर बातचीत करते हुए यह कहते हैं कि वे जो भी समझ पाएँ, उसके बारे में खुलकर बातचीत कर सकते हैं तो उनकी झिझक कम होती है और ऐसी अवधारणाएँ जो उन्होंने प्रयोग करके, या अपने साथियों से या अपने परिवेश से सीखी हैं (यदि उन्हें पढ़ना नहीं भी आता तो भी) वह उन्हें मौखिक रूप से बता सकती हैं। इससे यह भी समझ में आया कि छात्राओं की भोजन, पौधों, मशीनों और सूक्ष्मजीवों आदि के बारे में अच्छी समझ होती है। परन्तु सीधे प्रश्न पूछने पर वे परीक्षा में नहीं बता पाती हैं। यानी, जाँचना और सीखना साथ-साथ चलता रहे तो कक्षा का कोई भी बच्चा हताश नहीं होगा और अपनी समझ व क्षमता के अनुसार आगे बढ़ सकेगा।

शहनाज़ डी के, उदयपुर, राजस्थान के सरकारी विद्यालय में कक्षा 6 से 8 के बच्चों को पढ़ाती हैं। कक्षा में बच्चों के सीखने में आने वाली समस्याओं को समझने का प्रयास करती हैं। उनकी शिक्षा में हो रहे नवाचारों में रुचि है।
सम्पर्क : shehnazakir@gmail.com